Bihar Board Class 7 Science Notes Chapter 9 गंदे जल का निपटान

गंदै जल नालियों में बहता है, जिसमें झाग, तंल मिश्रित, काले, भरे रंग का जल जा शौचालय, दुकान, होटल और रमाईधर आदि स नालियों में जाता है जिसे "अपशिष्ट जल" कहते हैं। वाहित मल, घरों, स्कूलों, होटलों, अस्पतालों, उद्योगों आदि जगहों में उपयोग के बाद वाहित अपशिष्ट जल होता है। वाहित मल द्रवरूपी अपशिष्ट होता है । इसमें अधिकांश जल होता है और घुले हुए निलंबित अपद्रव्य होते हैं। ऐसे अपद्रव्य संदूषक कहलाते हैं। वाहित मल एक जटिल मिश्रण होता है जिसमें निलंबित ठोस कार्बनिक और अकार्बनिक अशुद्धियाँ, पापक तत्व, मृतजीवी और रोगवाहक जीवाणु तथा अन्य सूक्ष्म जीव होते हैं। कार्बनिक अशुद्धियाँ मानव मल, मूत्र, जैविक अशिष्ट, तेल, फल और सब्जी का कचरा आदि। अकार्बनिक अशद्धियाँ नाइट्रेट, फॉस्फेट धातुएँ आदि । हैजा और टायफॉयड़ आदि रोग उत्पन्न करने वाले जीवाणु । पेचिश रोग उत्पन्न करने वाले सूक्ष्मजीव रहते हैं। सोख्ता गड्ढे का प्रयोग करना चाहिए। दूषित जल से कई तरह के रोग उत्पन्न होते हैं। उनका रोकथाम के लिए आवश्यक कदम उठाना चाहिए। एक तालिका बनाते हैं।

बीमारी का नाम	लक्षण	कारण	रोकथाम
(1) पेचिश	पेट में मरोड़ के साथ दस्त होना, बार-बार दस्त होना	दूषित जल का सेवन	स्वच्छ जल पीना। पानी को उबालकर पीना।
(2) खुजली	बदन खुजलना	गंदे जल से स्नान, गंदे कपड़े का प्रयोग	साफ पानी से स्नान एवं साफ कपड़ा पहनना
(3) हैजा	कै और दस्त साथ-साथ होना	गंदे जल और भोजन का प्रयोग गंदे हाथों से भोजन करना	हाथों का साफ कर खाना खाना
(4) पीलिया	आँख नाखुन एवं पेशाब का पीला होना	दूषित पानी का सेवन	स्वच्छ जल, उबालकर पीना
(5) मेनिन जाइटिस	बुखार लगना	दूषित जल का सेवन	नाली के पानी से खतं में सिचाई न करना, नाली साफ रखना चाहिए।

मानव मल निपटान के लिए वैकल्पिक व्यवस्था होनी चाहिए। आज सैप्टिक टैंक, सूखा मोबाइल शौचालय का निर्माण किया जाता है। गंदे जल से निपटान के लिए भी शहरों में व्यवस्था की जाती है। शहरों में तीन प्रकार का नाला, पक्का नाला कच्चा नाला और भूगर्भ नाला । प्रदेश के सभी शहरी क्षेत्रों में भूगर्भ नालो. के

https://www.evidyarthi.in/

साथ वाहित मल उपचार संयंत्र स्थापित करना चाहिए ताकि शहरी क्षेत्र गंदे जल से मुक्त हो सके और गंदे जल का निकास सीधा नदी में न हो। क्योंकि कई तरह की बीमारियाँ तथा जलीय जीव-जन्तुओं का नुकसान होता है। गाँवों में भी गंदे जल का निपटान के लिए आवश्यक कदम उठाना चाहिए। मानव मल से उन्नत खाद 'बनाया जा सकता है। वायो संयंत्रों का उपयोग कर ऊर्जा की प्राप्ति की जाती है। नागरिकों को जागरूक होना चाहिए। सार्वजनिक स्थानों को सफाई करनी चाहिए।

evidyarthi